BA Part - III

History

By - Dr. Durga Bhawani

B A Part IIIrd. History (Hons.) VIIth Paper.

Date / /
Page

Q. ताइपिंग विद्रोह के कारणों एवं परिणामों का वर्णन करें।

Ans. — चीन में मंचू प्रशासन एवं विदेशी शक्तियों के हस्तक्षेप अथवा उपनिवेशवाद एवं ~~साम्राज्य~~ साम्राज्यवाद के विरुद्ध होने वाली प्रमुख प्रतिक्रियाओं में ताइपिंग विद्रोह का महत्वपूर्ण स्थान है। इस विद्रोह के निम्नलिखित मुख्य कारण थे : —

(1) चीन में विद्रोह की परम्परा — चीन में प्रशासनिक अव्यवस्था एवं भ्रष्टाचार तथा असफलता के विरोध में विद्रोह की परम्परा अत्यन्त प्राचीन काल से थी। चीनी जनता कन्फ्यूशियस के इस सिद्धान्त पर विश्वास करती थी कि "जब कोई राजवंश शासन करने की शक्ति खो देता है तो यह समझ लेना चाहिए कि ईश्वर ने अपने अधिकारों को वापस ले लिया है।" चीनी जनता सम्राट को अपना सम्प्रभु मानती थी, परन्तु यदि सम्राट निर्बल होता तो उसे सम्राट के पद पर बने रहने का कोई अधिकार नहीं था। चीन में इस प्रकार के विद्रोह हो चुके थे और ऐसे विद्रोहों से चीनी परिचित थे। इसी पृष्ठभूमि में मंचू शासन के विरुद्ध चीनीयों ने विद्रोह किया था।

(2) परवर्ती मंचू शासकों की दुर्बलता — चीन में मंचू वंश की स्थापना के साथ ही एक वर्ग ने यह प्रचार करना शुरु कर दिया था कि "चीन के स्वर्गिक साम्राज्य को मंचू वंश के शासन से मुक्ति दिलाना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि मंचू शासन चीन का हन्ता है।" इस प्रकार मिंग शासन की पुनर्स्थापना के पक्षधरों ने भी कहना शुरु कर दिया था कि "मंचू शासन को मार भगाओ तथा मिंग वंश की पुनः स्थापना करो।" शुरु के मंचू शासक योग्य थे, उन्होंने स्थिति को नियंत्रित रखा परन्तु परवर्ती मंचू शासक अयोग्य एवं शक्तिहीन थे। परवर्ती मंचू शासक न तो पश्चिमी साम्राज्यवादी पिपासा से चीन को बचा पाए और न ही चीन में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अव्यवस्था से। जिस समय ताइपिंग विद्रोह हुआ था उस समय चीन में सियन फेंग नामक दुर्बल शासक था।

(3) **आंतरिक अव्यवस्था** – सिएन फेंग के निर्बल शासन काल में भ्रष्टाचार की जिस गति से वृद्धि हो रही थी, उससे प्रशासनिक एवं सैनिक अधिकारियों में विलासिता की भावना घर कर गई थी। राजकीय अधिकारी अपने कर्त्तव्यों से गिर गए अतः देश में अव्यवस्था एवं अशान्ति फैल गई किन्तु मंचू शासक इन सबको रोकने में असमर्थ रहें क्यों कि प्रांतों के अधिकारियों पर उनका नियंत्रण नहीं के बराबर रह गया था।

(4) **सामाजिक एवं आर्थिक असंतोष** – चीन की जर्जर सामाजिक एवं आर्थिक अव्यवस्था ने ताइपिंग विद्रोह की पृष्ठभूमि तैयार की। वास्तव में, ताइपिंग विद्रोह के समय चीनी समाज मूलतः दो वर्गों में विभक्त हो गया था – प्रथम वर्ग में व्यवसायिक एवं शासकीय प्रतिष्ठानों से सम्बद्ध उच्च अधिकारी तथा सम्पन्न वर्ग था तो दूसरा वर्ग निर्धन, कृषकों, निर्धन मध्यम वर्ग एवं ग्रामीण सर्वहारा वर्ग था, द्वितीय वर्ग का जिस प्रकार ~~शोषण~~ प्रथम वर्ग द्वारा शोषण किया जा रहा था उससे द्वितीय वर्ग वालों में काफी रोष था। अतः द्वितीय वर्ग वालों ने खुले रूप से प्रथम वर्ग वालों का विरोध करना शुरु कर दिया।

जनसंख्या के तीव्र विकास ने कृषि पर दबाव डाल दिया, परन्तु कृषि के साधन परम्परावादी बने रहने से कृषि व्यवस्था में कोई सुधार नहीं हुआ था। अतः कृषि से निर्वाह एक कठिन प्रश्न बन गया।

इधर अफीम का आयात जिस प्रकार चीन में बढ़ रहा था उससे चाँदी के सिक्के विदेशों में जा रहे थे। अतः चीन अत्यन्त निराशाजनक आर्थिक स्थिति के कगार पर ~~खड़~~ खड़ा हो गया।

(5) **दक्षिण चीन में दुर्भिक्ष एवं बाढ़ का प्रकोप** – चीन की दुर्बल आर्थिक स्थिति पर 1846–49 ई० में क्वांगशी, युनान एवं क्वांगतुंग में लगातार होने वाले

दुर्भिक्ष एवं बाढ़ ने तीव्र घातक प्रहार किया। मंचू शासक पीड़ित लोगों की सहायता कर पाने में असफल रहे। अतः दक्षिणी चीन में गरीबी, महामारी एवं उत्पीड़न का जो भीषण जाल सेवा दौड़ चल रहा था, उसने जन असन्तोष को जन्म दिया।

⑥ सैन्य दुर्बलता — मंचू शासन सैनिक तंत्र पर आधारित था। आरम्भिक मंचू शासकों ने तो सैन्य बल पर बहुत ध्यान दिया किन्तु परवर्ती मंचू शासन काल में प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार ने सैन्य संगठन को भी प्रभावित किया। अनेक सैनिक पदाधिकारियों ने सैनिकों को मिलने वाले वेतन को स्वयं रखना शुरू कर दिया। निरीक्षण के समय मजदूरों और कुलियों को भर्ती किया जाने लगा। सैन्य प्रशिक्षण की कार्य-कुशलता नष्ट होने लगी। सर्वसाधारण का सैन्य पर से विश्वास उठ गया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मंचू शासन के विरोध में चीन में एक सम्भावित प्रतिक्रिया जन्म ले रही थी। जनता भ्रष्टाचार, आर्थिक असन्तोष एवं सामाजिक अव्यवस्था से उब चुकी थी और नई व्यवस्था की इच्छुक थी।

अतः उक्त परिस्थितियों में अनुकूल स्थिति देखकर "हुंग हसिऊ चुआन" ने "शांग ती हुई" नामक समिति का गठन कर मंचू प्रशासन की नीतियों के विरोध में 1851 ई० विद्रोह कर दिया जो इतिहास में ताइपिंग विद्रोह के नाम से जाना जाता है।

ताइपिंग विद्रोह के परिणाम — विदेशी शक्तियों का सहयोग प्राप्त कर मंचू सरकार ने ताइपिंग विद्रोह का दमन अवश्य कर दिया परन्तु इसके दूरगामी परिणाम निकले।

① चीन की कम्यून प्रथा का दूरगामी स्वरूप — 1854 ई० में ताइपिंग विद्रोहियों ने नानकिन पर

Date / /
Page

अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था और 1864ई
तक अपना अधिकार बनाए रखा। इस 10 वर्षों में
विद्रोहियों ने नानकिंग पर अपना शासन चलाया।
यही नहीं, भूमि सुधार के संबंध में
भी इसी विद्रोह ने चीन की साम्यवादी व्यवस्था की
पृष्ठभूमि तैयार की। भूमि का राष्ट्रीयकरण कर
उसे आवश्यकतानुसार परिवारों में विभाजित किया।
उत्पन्न पैदावार से परिवार अपना भरण-पोषण
करता एवं अतिरिक्त फसल सामूहिक गोदामों
में रखने की व्यवस्था की गई। इस प्रकार व्यक्तिवादी
भावना के स्थान पर साम्यवादी भावना का जन्म हुआ।
ताइपिंग विद्रोह ने चीन की जनता में
राष्ट्रीय भावना उद्दीपित करने में महत्वपूर्ण कार्य किया।
चीनी अब प्रत्यक्ष रूप से विदेशियों के बहिष्कार
की बात करने लगे तथा मंचू सरकार को विदेशियों
के हाथ की कठपुतली मानने लगे।

(2) **चीन में विदेशी प्रभुत्व का बढ़ना** – ताइपिंग
विद्रोह को कुचलने के लिए विदेशी शक्तियों
ने चीन में हस्तक्षेप किया था। विद्रोह दमन के बाद
सरकार पर विदेशी प्रभुत्व गहराता गया। रूस, इंगलैंड,
फ्रांस एवं जर्मनी ने चीन की विदेश नीति, आन्तरिक
प्रशासन एवं सैन्य व्यवस्था में अपना अपना प्रभुत्व
स्थापित करने का प्रयत्न किया इससे चीन का ~~आर्थिक~~
सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास रुक सा गया।

(3) **स्त्रियों की दशा सुधारने का प्रयत्न** – ताइपिंग विद्रोहियों
ने स्त्रियों की स्थिति सुधारने का भी प्रयत्न
किया। स्त्रियों के पैर बाँध कर रखने की प्रथा को
उन्होंने अपने शासन में अन्त कर दिया। स्त्रियों को
पुरुषों के समान शिक्षा एवं सम्पत्ति अधिकार दिए
गए। इतना ही नहीं स्त्रियों के खरीद-बिक्री पर भी
प्रतिबंध लगाया गया। इस प्रकार चीन में स्त्रियों की
स्वतंत्रता का आभास ताइपिंग विद्रोह की देन है।

ताइपिंग विद्रोह के परिणाम स्वरूप चीन का आन्तरिक जीवन अव्यवस्थित हो गया। गरीबी, भुखमरी एवं बीमारी के कारण लगभग दो करोड़ लोग काल के गाल में समा गए।

इस प्रकार मंचू सरकार की दयनीय स्थिति ने प्रांतीय अधिकारियों को संगठित होने में सहायता दी। अब छोटी-छोटी बात के लिए भी मंचू सरकार प्रांतीय अधिकारियों की सेना पर आश्रित हो गयी। इससे शक्ति केन्द्र के हाथ से निकल कर प्रांतीय अधिकारियों के पास पहुँच गई। विनाके ने ठीक ही लिखा है— "But while the rebellion was not successfull, it left its imprint for many years. It was the harbinger of the end of a dynasty." अर्थात "यद्यपि यह विद्रोह असफल हो गया, परन्तु इसके दूरगामी परिणामों ने मंचू वंश का पतन आरंभ कर दिया।"

———— X ————